बेंजामिन जंगल के अंदर

एलेअनोर

बेंजामिन जंगल के अंदर

एलेअनोर

यहाँ एक नगर है - बहुत ही व्यस्त नगर.
यहाँ कई घर हैं, कई दुकानें हैं.
यहाँ कई ट्रक और कई कारें हैं.
यहाँ लोग काम में व्यस्त हैं.
यहाँ बच्चे खेलों में मग्न हैं.
लेकिन बहुत समय पहले.........

लेकिन बहुत समय पहले
यहाँ कोई नगर नहीं था.
यहाँ घर नहीं थे.
यहाँ लोग नहीं थे.

सिर्फ जंगल था ...
हर ओर घना, गहन जंगल.

बहुत समय पहले, एक दिन,
एक परिवार उस जंगल में आया.
वह सब एक बड़ी घोड़ा-गाड़ी में आये.

वह सब इस जंगल में रहने आये -
माता
और पिता,

अंकल जॉन और एक
छोटा बच्चा,

दो घोड़े,
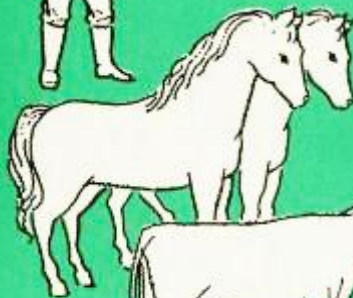
एक गाय,

एक सुअर,

और बेंजामिन.

बेंजामिन ने चारों ओर देखा.
"यहाँ इस जंगल में मुझे अच्छा
लग रहा है," उसने कहा.
"मैं खेल सकता हूँ शिकारी बनकर
या फिर एक इंडियन बनकर!"

लेकिन बेंजामिन को
खेलने का समय ही न मिलता था.
करने को बहुत काम था.
पिता और अंकल जॉन ने
पेड़ काटे.
बेंजामिन ने मदद की.

उन्होंने घर बनाया -

लकड़ी का एक छोटा-सा घर.

बेंजामिन ने मदद की.

फिर उन्होंने अनाज बोया.

बेंजामिन ने मदद की.

हर दिन उन्हें गाय का दूध
निकालना होता.
और बेंजामिन मदद करता.
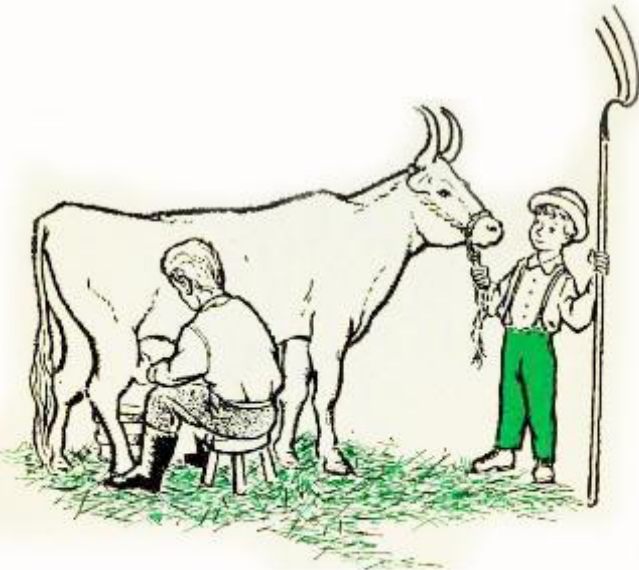
कभी-कभी पिता और अंकल जॉन
शिकार करने जंगल जाते.
लेकिन तब बेंजामिन
माँ की मदद करता.
उसे लकड़ी काटनी पड़ती.
और उसे पानी लाना पड़ता.

एक दिन उसकी माँ ने कहा,
"बेंजामिन, तुम बहुत काम करते हो.
अब तुम्हारे पास समय है.
थोड़ा खेल लो."
बेंजामिन बाहर भागा.
अब वह शिकारी या इंडियन
बनकर खेलेगा.

लेकिन वहां कोई नहीं था
जिसके साथ वह खेलता!
बेंजामिन जंगल में घूमने लगा.
वह अधिक दूर न जा पाया.
हर तरफ घना, गहन जंगल था.

“यहाँ तो कोई नहीं है जिसके साथ
मैं खेल सकूं,” बेंजामिन बोला.
“मेरे सिवाय तो यहाँ कोई नहीं है!”

वह क्या था?
क्या पेड़ के पीछे कोई छिपा था?
यह तो हिरण का बच्चा है!
हिरण ने अपनी बड़ी, भूरी आँखों से
बेंजामिन को देखा.

“डरो नहीं,” बेंजामिन ने कहा.
“मुझ से डरो नहीं.”

उसने हिरण के बच्चे को उठाया
और अपने घर की ओर दौड़ा.

“माँ, देखो!” उसने कहा.
“देखो मुझे जंगल में क्या मिला!
हिरण का एक बच्चा!
अब मेरे साथ खेलने के लिये
कोई तो होगा.”
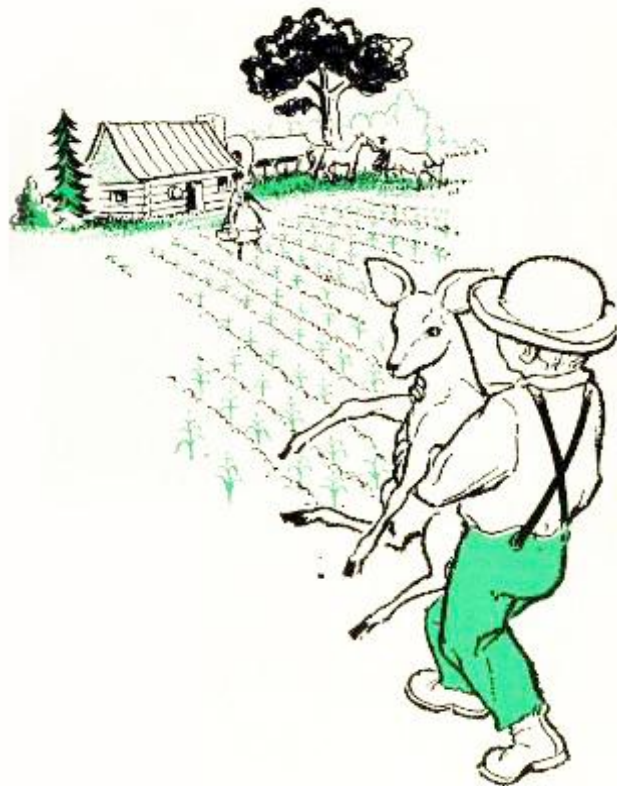
“ओह, बेंजामिन,” माँ बोली.
“तुम इस हिरण के बच्चे को
अपने पास नहीं रख सकते!”

“लेकिन यह तो जंगल में भटक गया था,”
बेंजामिन ने कहा.
“मुझे यह एक पेड़ के पीछे मिला.”

“नहीं,” माँ ने कहा.
“यह भटका हुआ नहीं था.
इसकी माँ इसे पेड़ के पीछे
छोड़ गई होगी.
वह अपने बच्चे को
ढूँढने वापस आएगी.
इसे वापस ले जाओ.”
“लेकिन मैं इसके साथ खेलना चाहता हूँ,”
बेंजामिन ने कहा.
“नहीं,” माँ ने कहा.
“तुम हिरण को नहीं रख सकते.
जल्दी ही यह बड़ा हो जाएगा.
फिर यह हमारा अनाज खा जाएगा.
और अपना सारा अनाज हमें चाहिये
लंबी सर्दियों के लिये.”

बेंजामिन हिरण के बच्चे को
पेड़ के पास छोड़ आया.

अगले दिन बेंजामिन
फिर जंगल घूमने गया.
कितनी खामोशी है!
“मेरे सिवाय तो यहाँ कोई नहीं है,”
बेंजामिन ने कहा.
लेकिन वहां जंगल में कोई था.
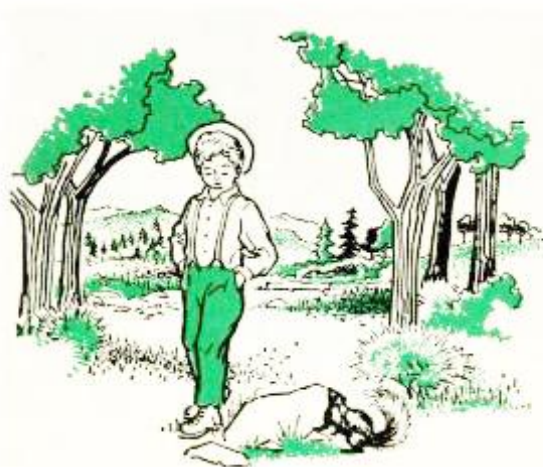
“तुम कहाँ से आये?”
बेंजामिन ने पूछा.
“तुम्हारे साथ खेलने में मज़ा आएगा.”
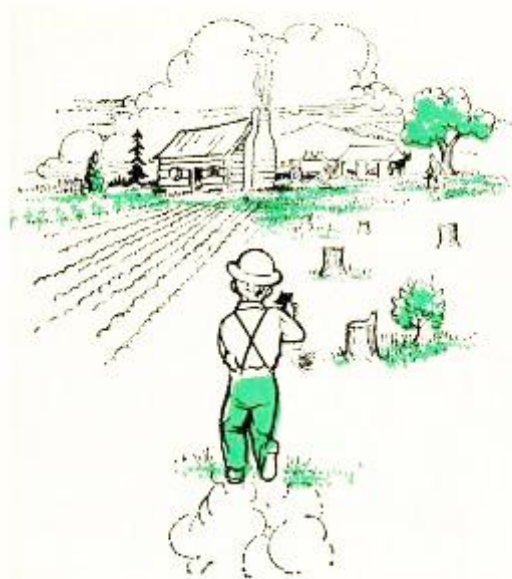
उसने स्कंक के बच्चे को
उठाया और
घर की ओर दौड़ा.

“माँ, देखो!” वह चिल्लाया.

“देखो मुझे जंगल में क्या मिला!

स्कंक का बच्चा!”

“बेंजामिन!” माँ ने कहा.

“तुम स्कंक के बच्चे को नहीं रख सकते!”

“क्यों नहीं?” बेंजामिन ने पूछा.

“बड़े होकर यह

हमारा अनाज नहीं खायेगा.”

“नहीं,” माँ ने कहा.

“लेकिन इसकी बहुत बदबू आएगी!

अभी इसे वापस छोड़कर आओ!

और ध्यान रखना

इसकी माँ तुम्हें न देख ले,

नहीं तो तुम से भी बदबू आने लगेगी.”

तो बेंजामिन स्कंक के बच्चे को
उसी समय
जंगल में छोड़ आया.

एक दिन फिर वह जंगल में घूमने निकला.
श..श..श.. पेड़ों के बीच हवा चली.
“मेरे सिवाय तो यहाँ कोई नहीं है!”
बेंजामिन ने कहा.
“काश, यहाँ कोई होता जिसके साथ
मैं खेल सकता.”

वह पेड़ से नीचे
क्या आ रहा था?
भालू का बच्चा!
“ओह,” बेंजामिन ने कहा. “ओ भालू
के मोटे, शरारती बच्चे!”

उसने भालू के बच्चे को उठाया
और घर की ओर दौड़ा.
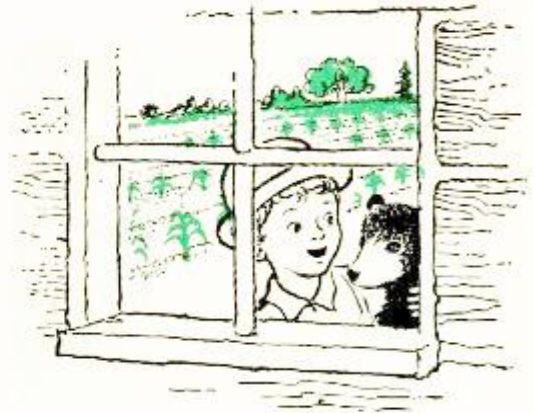
“माँ, देखो!” वह चिल्लाया.
“देखो मुझे जंगल में क्या मिला!”
“अब क्या ले आये हो?”
उसकी माँ ने पूछा.
“भालू का बच्चा!” बेंजामिन ने कहा.
“यह हमारा अनाज नहीं खायेगा और
इसकी बदबू भी नहीं आएगी.
क्या मैं इसे रख लूँ?”

माँ क्या कर रही थी?
उसने बेंजामिन को घर के अंदर
खींच लिया.
उसने भालू के बच्चे को
बाहर धकेल दिया.
और वह बंदूक लेने दौड़ी.
"क्या कर रही हो? क्या कर रही हो?"
बेंजामिन ने पूछा.

"वहां देखो!" उसकी माँ ने कहा.
"क्या दिखाई नहीं दे रहा?
भालू की माँ
सीधे हमारी ओर आ रही है.
उसे अपना बच्चा चाहिये."
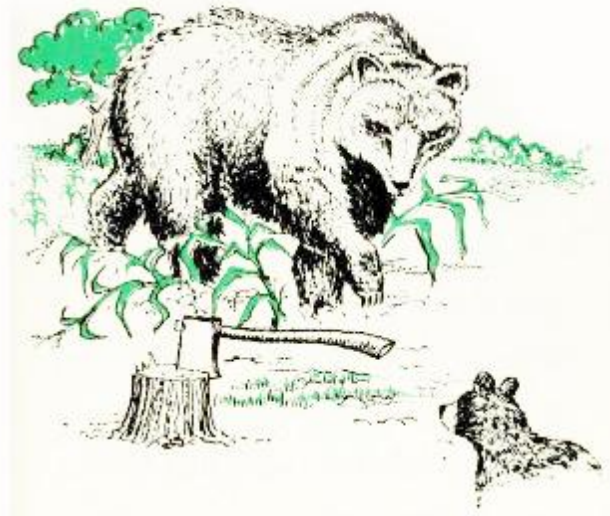
“तुम क्या करोगी?”
बेंजामिन ने पूछा.
“क्या उसे गोली मार दोगी?”
“अगर ज़रूरी हुआ तो मारूंगी,”
माँ ने कहा.
लेकिन भालू की माँ ने घर के अंदर
आने की कोशिश ही न की.
उसने बस अपना बच्चा लिया
और जंगल की और चली गई.

“बेंजामिन,” माँ ने कहा.
“अब तुम घर में कोई जानवर
नहीं लाओगे. समझे मेरी बात?”
“हाँ, माँ,” बेंजामिन ने
निराशा से कहा. “मैं समझ गया.”

अगले दिन बेंजामिन फिर
जंगल के अंदर गया.
वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया.
श..श..श.. पेड़ों के बीच हवा चली.
“यहाँ मेरे और हिरणों और भालुओं
और स्कंकों के सिवाय
कोई और नहीं है,” बेंजामिन ने
दुःखी मन से कहा.
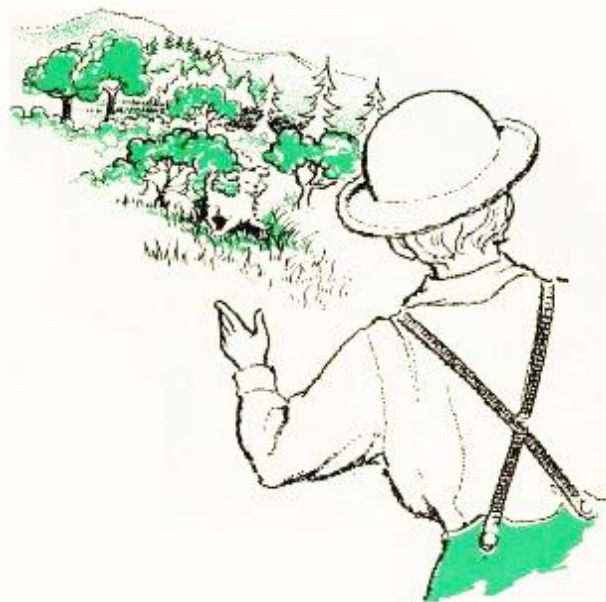
अचानक
बेंजामिन की ओर
दौड़ता हुआ कोई आया.
यह एक कुत्ता था - छोटा-सा सफ़ेद कुत्ता!
बेंजामिन ने कुत्ते को उठाया
और घर की ओर दौड़ा.

“माँ!” वो चिल्लाया.

“देखो जंगल में मुझे क्या मिला!”

“बेंजामिन!” माँ बोली.

“मैंने तुम से क्या कहा था?”

“लेकिन, माँ, यह तो कुत्ता है!”

बेंजामिन ने कहा.

“आओ, देखो!”

माँ बाहर दौड़ी आई.

“कुत्ता!” वह बोली.

“जंगल में यह कुत्ता

कहाँ से आ गया?”

पिता और अंकल जॉन भी
उसे देखने के लिये दौड़े आये.
“मुझे यह जंगल के अंदर मिला,”
बेंजामिन ने बताया.
“कृपया मुझे इसे रखने दो.”

“बेंजामिन,” उसके पिता ने कहा.
“यह कुत्ता किसी के साथ रहता होगा-
शायद किसी शिकारी के साथ.
हमें उसे ढूँढने की कोशिश करनी चाहिये.”
“अगर उस शिकारी को हम ढूंढ न पाए
तो?” बेंजामिन ने पूछा.
“फिर तुम यह कुत्ता रख सकते हो,”
पिता ने कहा.

“चलो बेंजामिन,” अंकल जॉन ने कहा.
“मुझे वह जगह दिखाओ
जहां यह कुत्ता तुम्हें मिला था.”
बेंजामिन और अंकल जॉन
गये जंगल के अंदर.
उन्होंने चारों ओर देखा
पर उन्हें कोई दिखाई न दिया.

तभी अचानक किसी ने पुकारा,
“यहाँ आओ, सैम! यहाँ आओ सैम!
तुम कहाँ हो?”
कुत्ते ने मुंह उठा कर देखा.
“वही शिकारी होगा,”
बेंजामिन ने निराशा से कहा.
“वह कुत्ता लेने आ रहा है.”
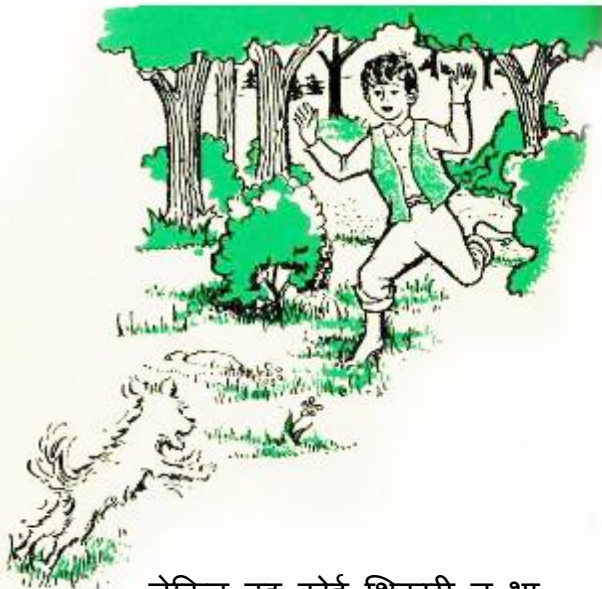
लेकिन वह कोई शिकारी न था.
वह तो एक लड़का था.
कुत्ता, लड़के की ओर दौड़ा और
कूद कर उसके पास पहुँच गया.
लड़के ने कुत्ते को उठा लिया.
"ओह, सैम!" लड़के ने कहा.
"तुम कहाँ चले गये थे, सैम?"

फिर लड़के ने बेंजामिन
और अंकल जॉन को देखा.
"क्या आपने मेरे कुत्ते को ढूंढ निकाला?"
उसने पूछा.
"हाँ," बेंजामिन ने कहा.
"वह जंगल में भटक गया था."

“तुम कहाँ रहते हो?” अंकल जॉन ने पूछा.
“तुम यहाँ क्या कर रहे हो?
तुम्हारे माता-पिता कहाँ हैं?”

“हम थोड़े समय पहले ही इस जंगल में
आये हैं,” लड़के ने कहा.
“हम एक घोड़ा-गाड़ी में आये.
अब हम यहीं रहेंगे.
आप कहाँ रहते हैं?”

“मेरे साथ आओ,” बेंजामिन ने कहा.
दोनों भाग कर बेंजामिन के घर आये.
“माँ,” बेंजामिन चिल्लाया.
“देखो मुझे जंगल में क्या मिला!”

“ओह, यह लड़का भी!” माँ बोली.
“अब क्या ढूंढ लाया होगा?”

फिर माँ ने लड़के को देखा.
“तुम कहाँ से आये हो?”
उसने पूछा.

“वह यहाँ रहने आया है,”
बेंजामिन ने बताया.
“वह अपने पिता और माता के साथ
घोड़ा-गाड़ी में आया है,
हमारी तरह!”

“चलो,” माँ ने कहा. “हम तुम्हारे
माता-पिता के पास चलते हैं.
उन्हें मदद की ज़रूरत होगी.”

“पेड़ काटने में हम उनकी
सहायता करेंगे,” पिता ने कहा.
“और अनाज बोने में,” अंकल जॉन ने कहा.
“हमें रास्ता दिखाओ,” पिता ने
उस लड़के से कहा.
और सब चल दिए.

“क्या तुम्हें इस जंगल में अच्छा लगता है?
लड़के ने पूछा.
“ओह, हाँ,” बेंजामिन ने कहा.
“यहाँ हिरण और भालू
और स्कंक हैं.”

लड़के ने बेंजामिन की ओर देखा.

फिर उसने कहा,

"क्या तुम शिकारी या इंडियन

का खेल खेलना चाहते हो?"

"ओह, हां," उसने कहा.

"मैं खेलना चाहता हूँ."

समाप्त